(index.php)
शोधशौर्यम्

Shodhshauryam
International Scientific Refereed Research Journal [Frequency : Bimonthly]

ISSN : 2581-6306
Impact Factor : 5.239
h-index = 3.6

Volume 4, Issue 3, May-June-2021

Impornant Links

Submit Online Manuscript (http://shisrrj.com/eJManager/index.php)
Paper Template (http://shisrrj.com/format/Paper_Template_A4.docx)
Copyright Form (http://shisrrj.com/format/Copyright_Form.docx)
SHISRRJ Xplore (http://shisrrj.com/search_result.php)

Cover Page (http://shisrrj.com/format/43.pdf)

Sr.No.	Title & Authors Name	Page(s)
1	**Work-Life-Balance of Working Women on Higher Education Sector** Shivani Verma (http://shisrrj.com/search_result.php?search=Shivani Verma) Assistant Professor, Mata Sundri College for Women, University of Delhi, Delhi, India	01-09

Show More

Scanned with CamScanner

Sr.No.	Title & Authors Name	Page(s)
10	श्रीभागवतमहापुराण के कपिलोपाख्यान में वर्णित सांख्यदर्शन दीपक तिवारी (http://shisrrj.com/search_result.php?search=दीपक तिवारी) शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग, संाची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय बारला, रायसेन, (मध्य प्रदेश) Show More	77-83
11	सुभद्रा कुमारी चैहान के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना देव अमर सिंह (http://shisrrj.com/search_result.php?search=देव अमर सिंह), डॉ. अनुराग मिश्र (http://shisrrj.com/search_result.php?search= डॉ. अनुराग मिश्र) शोधार्थी, हिन्दी विभाग, का.सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या Show More	84-90
12	प्रेमचंद की कहानियों के जीवंत पात्र डॉ. रमेश कुमार गोहे (http://shisrrj.com/search_result.php?search=डॉ. रमेश कुमार गोहे) सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, गुरू घासीदास वि.वि.बिलासपुर (छ.ग.) Show More	91-98
13	Prince Ahmed : Accession, Situations and Challenges : A Critical Study Dr. Refaq Ahmad (http://shisrrj.com/search_result.php?search=Dr. Refaq Ahmad) Assistant Professor, Medieval and Modern History, ISPGC, University of Allahabad, India Show More	99-102
14	मोक्ष का स्वरूप एवं जैन-दर्शन में उसकी मूल प्रवृत्तियाँ डॉ॰ उमा शर्मा (http://shisrrj.com/search_result.php?search=डॉ॰ उमा शर्मा) एसोसिएट प्रोफेसर, मनानक चन्द ऐंग्लो संस्कृत कॉलेज़, मेरठ, उत्तर प्रदेश।,भारत Show More	103-108

Scanned with CamScanner

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

प्रेमचंद की कहानियों के जीवंत पात्र

डॉ.रमेश कुमार गोहे
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग, गुरू घासीदास वि.वि.बिलासपुर (छ.ग.)

Article Info
Volume 4, Issue 3
Page Number : 91-98

Publication Issue :
May-June-2021

Article History
Accepted : 01 June 2021
Published : 15 June 2021

सारांश– प्रेमचंद ने तत्कालीन समाज और परिस्थितियों का समूल आंकलन किया है और उसी के अनुरूप पात्रों की संरचना कर उनके अंदर उन चरित्रों को भरने की भरपूर कोशिश की है। किंतु कुछ पात्र ऐसे हैं जिनको हम सभी भारतीयों ने अपने स्कूली कक्षाओं में अध्ययन के दौरान पढ़ा है और समाज में वे हमें यदा-कदा दिखाई दे जाते हैं। मेरे इस आलेख का अभिधेय यही है कि हम उन पात्रों पर यहां चर्चा करके उनको याद कर सकें। यह आलेख अपने इस उद्देश्य में कितना सफल हुआ ? आपके सुझाव और आगे के लेखन के लिए दिशा निर्देश हमेशा आमंत्रित हैं।

मुख्य शब्द– प्रेमचंद, कहानियां, समाज, पात्र, वातावरण, जीवन, रचना।

मुंशी प्रेमचंद कहानियां का सरोकार तत्कालीन समाज विशेष रूप से ग्रामीण समाज को यथार्थ एवं आदर्श का मिश्रण कर प्रस्तुत किया है। वे उस वातावरण से भली-भांति परिचित है उन्होंने उस वातावरण को स्वयं भोगा, समझा और परखा था। अपने युग की संपूर्ण संभावनाएं और उपलब्धियां उनकी कहानियों में व्याप्त हैं। कथा शिल्पी के रूप में जितना उदात्त उनका अनुभूति पक्ष है उतना ही श्रेष्ठ एवं उदात्त उनका अभिव्यक्ति पक्ष है अर्थात् वे अनुभूति एवं अभिव्यक्त में सदैव सफल रहे। कहानी के बारे में वे कहते हैं , 'कहानी जीवन के बहुत निकट आ गई है।' प्रेमचंद ने अपने साहित्य में सभी पात्रों को बहुत ही जीवंत के करीब रखा है इसलिए यह कोई नहीं कह सकता कि इनमें से सबसे अच्छा पात्र कौन है। प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में जन साधारण की भावनाओं, परिस्थितियों और उनकी समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया। उनकी कृतियां भारत के सर्वाधिक विशाल और विस्तृत वर्ग की कृतियां हैं।

बूढ़ी काकी - प्रेमचंद ने वृद्धावस्था पर बूढ़ी काकी एक ऐसी कहानी लिखी है कि जहाँ भी कहीं वृद्धावस्था की दुर्दशा देखने में आती हैं वहीं बूढ़ी काकी पात्र आँखों के सामने आ जाती है और उसी कहानी से जुड़े पात्र, बुधीराम, रूपा और लाड़ली। बुधीराम बूढ़ी काकी की संपत्ती का मालिक है, रूपा उसकी बहू है और लाड़ली पोती। परिवार में अब बूढ़ी काकी का कोई स्थान नहीं है। न तो निणर्यो में, न घर में । उसके रहने की एक अलग कोठरी है और खाने के लिए रूखा-सूखा या बचा हुआ बासी भोजन। प्रेमचंद ने बुढ़ापा के समय की चित्तवृत्तियों को बड़ी बारीकी से उल्लेख किया है। "बुढ़ापा तृष्णा रोग का अंतिम समय है, जब सम्पूर्ण इच्छाएँ एक ही केंद्र पर आ लगती हैं। बूढ़ी काकी में यह केन्द्र उनकी स्वादेन्द्रिय थी।"[1]

इस कहानी की शुरूआत में ही प्रेमचंद ने बुढ़ापा का विधिवत उल्लेख किया है। यह अंश पठनीय है कि "बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है। बूढ़ी काकी में जिहवा स्वाद के सिवा और कोई चेष्टा न थी और न अपने कष्टों

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

Scanned with CamScanner